साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 42, अगस्त(प्रथम) , 2018

यात्रा संस्मरण - रहस्यों का देश मिस्र

महेश चंद्र द्विवेदी

अफ्रीका महाद्वीप स्वयँ में रहस्यों का भंडार है. किशोरावस्था में मैंने जब राइडर हैगर्ड का उपन्यास 'शी' पढ़ा था, तभी से अफ्रीका के रहस्यमय संसार के प्रति मन में बच्चों जैसा कौतूहल व्याप्त हो गया था और अनिंद्य सुंदरी अक्षतयौवना 'शी' के प्रति अमिट काल्पनिक आकर्षण भी घर कर गया था. अफ्रीका में मानव का प्रथम प्रादुर्भाव होने, अफ्रीका में अनोखे वनों एवँ अनोखे वनजीवों के पाये जाने, तथा अफ्रीका की आदिमजातियों में वीभत्स एवँ रोमांचकारी रीति-रिवाज़ों के विद्यमान होने के ज्ञान ने अफ्रीका के प्रति मेरा सम्मोहन और बढ़ा दिया था. इसलिये जब वर्ष 2016 के अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन के मिस्र में आयोजित होने की सूचना मिली थी, तो कतिपय विपरीत परिस्थितियों के होते हुए भी मैंने उसमें सम्मिलित होने हेतु हामी भर दी थी. विपरीत परिस्थितियों में प्रमुख थी मिस्र में सुरक्षा एवँ शांति की स्थिति. मैंने गूगल महाराज से जब इस विषय में पूछा, तो उन्होंने जो बताया था, वह बहुत आश्वस्तकारी नहीं था,

''ब्रिटेन की सरकार ने इस विषय में अपने नागरिकों के लिये सलाह निर्गत की है कि उत्तरी साइनाई क्षेत्र में कतई न जायें, दक्षिणी साइनाई क्षेत्र के शर्म-एल-शेख एवँ पश्चिमी मिस्र में केवल अपरिहार्य होने पर ही जायें. मध्य क्षेत्र के काहिरा, अलेक्ज़ांड्रिया आदि में जाने से पहले वहां की स्थिति ज्ञात कर लें..... मिस्र में यदि किसी स्थान पर भीड़ इकट्ठी हो और झगड़ा या आंदोलन हो रहा हो, तो वहां से अविलम्ब खिसक लें.''

साहित्य सम्मेलन का आयोजन काहिरा एवँ अलेक्ज़ांड्रिया में 29 जनवरी से 3 फरवरी, 2016 के मध्य होना था. इस आयोजन से लगभग सप्ताह

भर पहले काहिरा से सटे हुए नगर गीज़ा में एक घर में पुलिस की रेड के दौरान विस्फोट से कुछ व्यक्तियों के मरने की खबर आई थी, अतः मन में अनहोनी का एक भय अवश्य समा गया था. मेरी पत्नी नीरजा ने तो यहां तक कह दिया था कि लगता है मिस्र में हम अपने पिरामिड बनवाने जा रहे हैं.

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार मैं एवँ मेरी पत्नी नीरजा द्विवेदी एयर इंडिया के विमान से 28 जनवरी को 2 बजे दिन में मुम्बई पहुंच गये थे. वहां एयरपोर्ट से 235/- रुपये में प्री-पेड टैक्सी लेकर एस-रेज़िडेंसी होटल चले गये थे. वहीं पर देश के विभिन्न भागों से आने वाले पचास लेखकों एवँ कलाकारों को रात्रि-विश्राम करना था. कुवैत एयरवेज़ का वह जहाज़, जिसे हमें लेकर कुवैत तक जाना था, दूसरे दिन साढे पांच बजे प्रातः जाना था. हम दोनों होटल के रजिस्टर में अपना आगमन लिखा ही रहे थे कि दिल्ली से आभा चौधरी एवँ मंजु जी आ गईं और फिर अन्य प्रतिभागियों का आना लगा रहा. सायँकाल हमें रायपुर से पधारे जे. आर. सोनी के कमरे में एकत्र होने की सूचना दी गई. वहां हमें वे प्रतीक चिन्ह, जो सोनी जी हमारे लिये लाये थे, बांट दिये गये. ये प्रतीक चिन्ह काहिरा में सम्मेलन के दौरान हम सब प्रतिभागियों को औपचारिक रूप से दिये जाने थे. सोनी जी ने इन्हें यहीं बांटने का कारण बताया कि प्रतीक चिन्हों का वज़न अधिक है और उन्हें उनके स्वयँ के सामान के साथ तुलवाने में बहुत *चार्ज* लगेगा, जबकि सबके सामान के साथ एक-एक बांट देने में मुफ्त में ले जाये जा सकेंगे. वहां पर हमारा परिचय कथक नृत्यांगना अनुराधा दुबे एवँ ममता अहार, वाराणसी की प्रोफेसर डा. मुक्ता, महाराष्ट्र की प्रो. डा. मीनाक्षी जोशी, सेवा शंकर अग्रवाल, मीना अग्रवाल आदि से हुआ. इनमें से डा. मीनाक्षी जोशी हमें पहले दुबई में मिल चुकी थीं.

होटल में एक ही कार थी, जिसे हम सबको कई बार में रात्रि में एयरपोर्ट पहुंचाना था. अतः मैं, मेरी पत्नी नीरजा, मीनाक्षी जोशी और शिखा रात्रि एक बजे ही वहां से चल दिये थे. नीरजा को लम्बी दूरी तक पैदल चलने में कष्ट

होने के कारण उनके लिये *व्हीलचेयर* ले ली थी, जिसके कारण उन्हें और मुझे प्रत्येक जांच-पड़ताल के स्थान पर वरीयता मिली थी. अतः वह और मैं औरों से एक घंटे पहले ही *सिक्योरिटी चेक* के उपरांत *डिपार्चर लाउंज* में पहुंच गये थे. कुछ समय पश्चात एयरलाइंस के एक कर्मचारी ने मेरा नाम पुकारा और मेरे निकट पहुंचने पर बताया कि हम दोनो के टिकट को *एक्ज़ीक्यूटिव क्लास* में *अपग्रेड* कर दिया गया है. यह सुनकर मै अचम्भित हुआ, परंतु प्रकटतः केवल *थैंक्स* बोला. नीरजा भी आश्चर्यचकित हुईं और मुझसे अलग से बोलीं, 'चलो, मेरी भी *एक्ज़ीक्यूटिव क्लास* में सफर करने की अभिलाषा पूरी हो गई.' इस *अपग्रेडेशन* का कारण तो मुझे आज तक नहीं ज्ञात हुआ, परंतु हमने अनुमान लगाया कि हो सकता है कि यह मेरे बेटे द्वारा एयरपोर्ट के एक जान-पहिचान वाले अधिकारी को हम लोगों का खयाल रखने हेतु फोन कर देने के कारण हुआ हो.

मुम्बई से *प्लेन* दो घंटे देर से उड़ा. यद्यपि कारण की घोषणा नहीं हुई, परंतु उड़ती हुई खबर मिली कि हमारे *प्लेन* का दरवाज़ा बंद हो गया था और खुलने से साफ मना कर रहा था. मिस्त्रियों द्वारा उसकी मान-मनौव्वल कर खोलने में दो घंटे का समय लग गया. तब नीरजा बोलीं,

'अब तो लगता है कि यह जहाज़ मिस्र मेँ हमारे पिरामिड बनने देने के बजाय रास्ते में ही कहीं दुर्गम्य रेगिस्तान में हमारी हड्डी-पसली बिखेरेगा.'

नीरजा ने मुम्बई एयरपोर्ट पर एक और खास बात मुझे ध्यान दिलाई कि वहां प्रत्येक घोषणा केवल अंग्रेज़ी में हो रही थी, जबकि आगे कुवैत में हमने पाया कि अरबी और अंग्रेज़ी के अतिरिक्त हिंदी में भी घोषणायें हो रही थीं. तब हमें ज्ञात हुआ कि दूसरे तो हमारी भाषा को सम्मान देते हैं, बस हमें अपनी भाषा को सम्मान देने में अपनी नाक नीची होती हुई लगती है.

कुवैत की यात्रा लगभग चार घंटे की थी. एक्ज़ीक्यूटिव क्लास में एयरहोस्टेस हमारा विशेष खयाल रख रही थी. हमारे अन्य साथी *इकौनमी* क्लास में थे, अतः हमें अपने को विशेष होने की अनुभूति भी हो रही थे. प्लेन के उड़ने के पश्चात देर तक अंधेरा रहा, परंतु कुवैत आने से पहले ही नीचे देखने पर धूप में वहां के बहुमंज़िली भवनों की ऊंची-ऊंची अट्टालिकायें और स्थान-स्थान पर तेल के कुँये और तेल ले जाने के पाइप दिखाई देने लगे थे. रेतीली और पथरीली धरती पर हरियाली कहीं भी दिखाई नहीं दे रही थी, पर तेल ले जाने के अनेक पाइप अवश्य हरे रंगे हुए थे. मैने पढ़ रखा था कि कुवैत दुनिया के सबसे धनी देशों में एक है. अतः यह देखकर मुझे आश्चर्य हुआ कि कुवैत का एयरपोर्ट छोटा और पुराने प्रकार का था और हमें जहाज़ से वेटिंग-लाउंज तक बस से आना पड़ा था. हमारे वेटिंग-लाउंज में सभी यात्रियों के बैठने भर को भी स्थान नहीं था. बाद में मुझे दुबई में रहने वाले अपने एक सम्बंधी से पता चला कि शेखों के जिस खानदान का कुवैत पर शासन है, उसके लोग देश की प्रगति की सोचने के बजाय आपसी कलह एवँ अय्याशी में अधिक व्यस्त रहते हैं. देर से पहुंचने के कारण हमें वहां प्रतीक्षा अधिक नहीं करनी पड़ी. कुवैत और भारत का समय-अंतराल ढाई घंटे का था. वहां से काहिरा की यात्रा लगभग तीन घंटे की थी और कुवैत से काहिरा का समय-अंतराल एक घंटे का था. जहाज़ के कुवैत से आगे बढ़ते ही रेगिस्तान व पथरीली पहाड़ियों का अनंत विस्तार दिखाई देने लगा था - न कोई गांव, न आदमी, न पशु-पक्षी और न वृक्ष. रेगिस्तान और पथरीली पहाड़ियों पर अनंत काल से पड़ने वाली तेज़ गर्मी और तेज़ हवा की मार से खिंची रेखायें हवाई जहाज़ से देखने पर जलधारा का भ्रम उत्पन्न कर रहीं थीं. उस दृश्य का अपना रोमांच था. एक स्थान पर पानी की एक बड़ी झील दिखाई दी. इस विस्तृत जलाशय के चारों ओर सड़क बनाई गई थी एवँ उसके किनारे घर बने हुए थे. झील के पानी का रंग गहरा नीला दिखाई दे रहा था, जिससे स्पष्ट था कि जल स्वच्छ था. काहिरा के निकट पहुंचने पर हमें दूर से बहुत चौड़े फांट वाली जल

से लबालब नील नदी, उसमें चलतीं बड़ी-बड़ी नावें और उसके किनारों पर निर्मित अथवा निर्माणाधीन बहुमंज़िली अट्टालिकायें दिखाई देने लगी थीं. हम लगभग तीन बजे दिन काहिरा एयरपोर्ट पहुंच गये थे. हम वीसा लेकर नहीं गये थे, क्योंकि मिस्र में भारतीयों को एयरपोर्ट पहुँचने पर वीसा मिल जाता है. अहमद नाम के गाइड ने हमारा स्वागत किया और लगभग एक घँटे में ही हम सब को वीसा दिलवा दिया. मैंने बाद के दिनों में पाया कि मिस्र में अधिकांश गाइड, वेटर, ड्राइवर आदि का नाम अहमद से प्रारम्भ अथवा समाप्त होता था; यह वैसे ही था जैसे हमारे यहां अधिकांश नामों का एक भाग राम या कृष्ण होता है. मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि काहिरा का एयरपोर्ट भी पुराना सा था और साफ़-सफ़ाई में हमारे लखनऊ के एयरपोर्ट के स्तर का भी नहीं था. वहां से बाहर निकलकर जब हम लोग दो बसों में बैठकर गीज़ा स्थित 'पिरामिड पार्क्स रिसौर्ट', जहां हमारे रुकने का प्रबंध था, के लिये चले, तब देखा कि वहां एक नये एयरपोर्ट का निर्माण प्रारम्भ हो चुका था. आगे राष्ट्रीय पुलिस अकादमी एवँ अन्य भव्य परिसरों तथा आवासिक भवनोँ का निर्माण हो रहा था. स्पष्ट था कि भविष्य में यह नया काहिरा बनने वाला था. अहमद ने बताया कि काहिरा के फ्लैट्स बहुत महंगे बिकते हैं. गीज़ा आते आते दिखाई पड़ा कि अनेक आवासों की दीवालों पर प्लास्टर नहीं किया गया था, जिससे उनका मूल्य ऐसा रहे कि मध्य वर्ग के लोग भी उन्हें क्रय कर सकें. रास्ते में हमे दूर से पिरामिड भी दिखाई दिये.

अहमद ने बताया कि मिस्र देश की केवल छः प्रतिशत भूमि ही उपजाऊ है और 94 प्रतिशत रेगिस्तान या सूखा पहाड़ है. मिस्र देश की 10 करोड़ आबादी मुख्यतः नील नदी के दोनो किनारों पर ही बसी है. नील नदी युगांडा देश में स्थित विशाल आकार की विक्टोरिया झील से निकलकर उत्तर दिशा में बहती है. यह संसार की सबसे लम्बी नदी है. अनेक देशों में बहती हुई यह नदी 6700 किलोमीटर का सफ़र तय करके भूमध्यसागर में गिरती है. प्रारम्भ में इसे व्हाइट नील नदी कहते हैँ. आगे चलकर इथिओपिया देश से ब्लू नील इसमें

आकर मिल जाती है. मिस्र देश में दक्षिण से उत्तर दिशा में बहकर यह मिस्र देश को पूर्वी एवँ पश्चिमी भागों में बांटती है. फैरोज़ के ज़माने से मान्यता है कि पूर्वी भाग जीवित लोगों का देश है, अतः सभी प्राचीन महल व बाग-बगीचे पूर्वी भाग में ही बने हैं. पश्चिमी भाग मृत्यु के उपरांत जीवन का देश है, अतः प्राचीन काल के सभी पिरैमिड, कब्र आदि जिनमें मृत्योपरांत शरीरों को रखा जाता था, पश्चिमी भाग में हैं. इस मान्यता का आधार सूर्य का पूर्व से उदय होना और पश्चिम में अस्त होना भी है. काहिरा और गीज़ा नगरद्वय (ट्विन-सिटीज़) हैं. नील नदी के पूर्वी भाग पर अधिकांश काहिरा बसा है और पश्चिमी पर अधिकांश गीज़ा. काहिरा और गीज़ा की स्थायी आबादी 1.8 करोड है और लगभग 40 लाख लोग बाहर से प्रतिदिन यहां काम पर आते हैं. मिस्र के सबसे बड़े पिरामिड गीज़ा में ही हैं. गीज़ा में हमारे रुकने का *पिरामिड पार्क्स रिसौर्ट* सचमुच भव्य एवँ सुंदर था- लम्बी-चौड़ी *लौबी*, विशाल *स्विमिंग-पूल* और दूर-दूर स्थित रहने के कमरे.

यद्यपि मध्यान्ह भोजन का समय निकल चुका था, परतु हम लोगों के लिये लंच रोक रखा गया था, जिसे खाकर और एक घंटा विश्राम करने के उपरांत हम लोग नील नदी पर क्रूज़ का आनंद उठाने चल दिये. जब हम नील नदी के तट पर पहुंचे, अंधकार हो चुका था एवँ किनारे पर स्थित होटलों एवँ जल में पड़ी दुल्हन सी सजी-धजी नौकाओं की *लाइट्स* को *औन* कर दिया गया था. नील नदी के किनारे दूर दूर तक एक से एक भव्य रूप मेँ स्वर्णिम रंगों में सजी जगमगाती नावों की कतार थी. किनारे पर अनेक स्वर्णिम रंग की फैरोज़ व उनके परिवारिक सदस्यों की विशालकाय मूर्तियां एवँ पिरामिड के प्रतिरूप आदि बने हुए थे. ये सब नदी के किनारे के मध्यम रखे गये प्रकाश में एक इंद्रलोक की रहस्यात्मक सुंदरता को उत्पन्न कर रहे थे. हमारी क्रूज़-बोट का नाम भी फ़ैरो ही था. प्रवेश मार्ग पर हमारा स्वागत फ़ैरो जैसे वस्त्र पहिने एक भीमकाय काले पुरुष ने किया. उसकी आकृति के समक्ष हम सभी बौने लग रहे थे. हममें से अधिकांश ने उसके साथ फोटो खींचे.

फ़ैरो की वेशभूषा मे अफ़्रीकन

क्रूज़ बोट में हम सब के लिये करीने से *डाइनिंग टेबुल्स* लगी हुई थीं. मधुर भारतीय एवँ मिस्री संगीत बज रहा था. हमारे पहुंचने के बाद शीघ्र ही बोट चल पड़ी थी. वहां से किनारे पर स्थित जगमग-जगमग कर रहे बहुमंज़िली होटलों की छटा अवर्णनीय लग रही थी. नदी में पीछे छूटती तरगों का कलरव अत्यंत कर्णप्रिय लग रहा था. शीघ्र ही भोजन परोसा जाने लगा. इसमें अधिकांश भारतीय व्यंजन थे.

भोजनोपरांत प्रारम्भ हो गया सांस्कृतिक कार्यक्रम- अर्थात भारतीय एवम मिस्र के संगीत पर नृत्य, *बेली-डांस* एवँ प्रकाश-पुंज युक्त परिधान पहिनकर घुमावदार मिस्री नृत्य. बेली डांस पहले मैं दुबई में देख चुका था. यहां भी उसी प्रकार वाद्य-यंत्र की मंत्रमुग्ध करने वाली लय-ताल पर नृत्यांगना अपनी कमर के ऊपरी भाग को हिला रही थी. अंतर केवल *इतना था* कि यहां नर्तकी हम लोगों के बहुत निकट आ जाती थी और अपने साथ फोटो खिंचाने को प्रेरित करती थी. बाद में उस फोटो का प्रिंट हम यात्रियों को काफ़ी मँहगा बेच दिया गया था. हममें से अनेक ने स्वयँ भी पैर चलाकर, कमर मटकाकर अथवा कंधे हिलाकर

डांस का आनंद लिया. जयप्रकाश मानस जी ने खुलकर *डांस* किया और मुझसे भी नृत्य के कुछ उल्टे सीधे कदम उठवाये.

क्रूज़-बोट पर दो घंटे धमाचौकड़ी करने के उपरांत हम लोग रिज़ौर्ट में आकर सो गये. मैंने सोने से पहले अपने कमरे में लटकता बड़ा सा पर्दा हटाकर बाहर देखा तो आकाश में छाये बादल दूर दूर तक अंधकारमय सन्नाटा उत्पन्न कर रहे थे. हल्की सी रिमझिम भी प्रारम्भ हो गई थी. ऐसे में निकटस्थ पिरैमिडों में सहस्रों वर्षों से सोये हुए फैरो एवँ उनकी अद्‌वितीय सुंदरी रानियों का ध्यान में आना स्वाभाविक था. इस रहस्यमय रोमांच को चलचित्र सम सोते में चलते रहने देने के उद्‌देश्य से मैंने पर्दा बंद कर दिया और कम्बल ओढ़कर सो गया. पता नहीं रात्रि में उस रोमांच का तारतम्य चला या नहीं, पर सुबह जब जागा तो बाहर अच्छी खासी वर्षा हो चुकी थी और हवा में ठंड थी. हम दोनो जल्दी-जल्दी तैयार होकर *डाइनिंग हौल* को चल दिये. नाश्ते के बाद 9 बजे से *कंवेंशन हौल* में साहित्यिक-सांस्कृतिक सम्मेलन का आयोजन था.

सम्मेलन मंच

कंवेंशन हौल अधोतल पर था, पर इतना बड़ा था कि आसानी से 250-300 लोग भाग ले सकें. मंच पर 9 व्यक्तियों के बैठने के लिये स्थान था - आठ विशिष्ट अतिथि एवँ एक संचालक. कार्यक्रम पांच सत्रों में बंटा था - आयोजकों द्वारा प्रथम सत्र का अध्यक्ष मुझे मनोनीत किया गया था. इस सत्र में उद्घाटन, विमोचन एवँ सम्मान समारोह आयोजित हुए थे. इसी सत्र में नीरजा द्विवेदी की नवप्रकाशित पुस्तक 'रुहेलखंड के परम्परागत लोकगीत' का लोकार्पण भी किया गया. अन्य सत्रों में साहित्यिक वार्ता, रचनाओं का पठन पाठन, सांस्कृतिक कार्यक्रम एवँ पुरस्कार/प्रतीक चिन्ह वितरण समारोह आयोजित हुए. अंतिम सत्र में मुझे प्रो. सहदेव सिंह स्मृति सम्मान दिया गया. यह जानकारी होने पर कि महान सामाजिक विचारक एवँ लेखक प्रो. सहदेव सिन्ह मेरे मूलनिवास के जनपद इटावा के ही रहने वाले थे, मुझे आत्मिक आनंद की अनुभूति हुई.

सम्मान पत्र

सांस्कृतिक सत्र बड़े मनोरंजक थे. प्रसिद्ध नृत्यांगना अनुराधा दुबे, ममता अहार, काजल और चित्रा जांगिड़ ने कथक नृत्य एवँ नृत्यनाटिकाओं के अविरल प्रदर्शन से समा बांध दिया था. हम सभी ने उनके नृत्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की.

31 जनवरी को प्रातः बजे मौसम साफ़ था और ठंडक वैसी 9 ही थी जैसी उत्तर भारत के दिल्ली, लखनऊ आदि नगरों में इन दिनों रहती है . मिस्र के उत्तरी भाग .तभी हमलोग दो बसों में अलेक्ज़ाँड्रिया के लिये चल दिये थे हमारी .में भूमध्यसागर के किनारे स्थित यह मिस्र का दूसरा सबसे बड़ा नगर है लिखी थी एवँ राष्ट्रीय-एक सुंदर लड़की जो खूब पढ़ी -बस में गाइड थी रिहाब तथा अंतर्राष्ट्रीय मसलों कीअच्छी जनकार भी थी एक सहयात्री के पूछने पर . उसने बिना किसी झिझक के बताया था कि वह तलाकशुदा है और एक बच्चे व .की माँ हैह सिर तो अवश्य ढके हुए थी परंतु एक पाश्चात्य सभ्यता की लड़की की भांति खुलेपन का एवँ आत्मविश्वासमय व्यवहार कर रही थी .बाद में मैंने दूसरी बस की गाइड को रिहाब के विषय में कहते सुना था कि 'शी इज़ दि बेस्ट गाइड इन इजिप्ट.'

रिहाब ने जब मिस्र के विषय में बताना प्रारम्भ किया, तो हम सब एकाग्रचित्त हो उसे सुनते रहे. उसने बताया कि अलेक्ज़ांड्रिया मिस्र के इतिहास का एक महत्वपूर्ण भाग रहा है . मिस्र का ज्ञात इतिहास 2660 ईसापूर्व से प्रारम्भ होता है और ईसापूर्व 331 तक यहाँ मिस्री फ़ैरोज़ का आधिपत्य रहा, परंतु 331 ईसापूर्व में अलेक्ज़ांडर द्वारा यहाँ आकर अलेक्ज़ांड्रिया नगर बसाया गया और फिर लगभग 300 वर्ष तक यहाँ टोलेमी वंश के ग्रीक्स का प्रभुत्व रहा. यद्यपि पहले भी यहाँ एक छोटा सा नगर था, परंतु इसका स्वर्णिमकाल 331 ईसापूर्व में अलेक्ज़ांडर द्वारा इसको जीतने एवँ उसके साथी टोलेमी द्वारा इसका व्यापारिक केंद्र के रूप में निर्माण करने के पश्चात प्रारम्भ हुआ. अलेक्ज़ांडर की मृत्यु के बाद टोलेमी उसके पार्थिव शरीर को यहीं लाया था और उसे वहीं दफ़नाया था. 32वीं ईसापूर्व में जुलियस सीज़र ने इसे जीता और रोम का आधिपत्य स्थापित किया. जुलियस सीज़र और यहां के टोलेमी वंश की अतीव सुंदरी राजकुमारी क्लियोपैट्रा की प्रेम कहानी तो जगप्रसिद्ध है ही .यह नगर प्रकृति की मार की चपेट में भी आ चुका है - 21 जुलाई, 365 ईसवी को सुनामी में यह नगर नष्ट

हो गया था और उसके अवशेष अभी भी समुद्र तल में मिलते हैं. 641 ईसवी में मुहम्मद साहब ने यहाँ इस्लाम का प्रभुत्व स्थापित किया और अधिकांश देशवासियों को मुस्लिम बना दिया . फिर यह इस्लाम, यहूदी, तुर्की और अंग्रेज़ों के प्रभाव में रहा. 1956 ईसवी में सुएज़ कैनाल के प्रकरण में वर्चस्व प्राप्त करने के उपरांत मिस्र विदेशी प्रभाव से पूर्णतः मुक्त एवँ स्वतंत्र हुआ.

द गार्डेन में नीरजा द्विवेदी एवँ डा. दास

अलेक्ज़ांड्रिया मेँ हम सबसे पहले 'द गार्डेन' देखने गये. यह स्थान सागर के तट पर है. यहाँ 1890 ईसवी में बनवाया मुर्तज़ा-महल है. छुट्टी का दिन होने के कारण हम महल देखने अंदर नहीं जा सके, परंतु गेट के बाहर से हम सबने खूब फोटो खींचे. महल तो एक बड़े होटल के भवन जैसा लग रहा था, परंतु उसके चारों ओर करीने से लगाये गये खजूर और ताड़ के वृक्षों का लम्बा-चौड़ा बगीचा, ऊंचे-नीचे टीले और सामने हरहराता सागर अत्यंत मनोहर लग रहे थे.

द लाइट हाउस

लगभग एक घंटा वहाँ बिताने के बाद हम ऐतिहासिक लाइट-हाउस एवँ वहीं बना कासिल देखने गये. कहते हैँ कि यह दुनिया के सबसे पुराने लाइट-हाउस में से है. अब इसका उपयोग केवल *टूरिस्ट-ऐट्रेक्शन* की भांति किया जाता है. यहाँ से हम विश्व प्रसिद्ध अलेक्ज़ांड्रिया-लाइब्रेरी देखने गये.

यह लाइब्रेरी 300 ईसापूर्व के आसपास स्थापित हुई थी और कहा जाता है कि उस काल में इतनी बडी लाइब्रेरी विश्व में नहीं थी. वर्ष 2002 ईसवी में इस लाइब्रेरी का पुनर्निर्माण एवँ आधुनिकीकरण किया गया है. अब इसमें एक साथ 2000 लोगों हेतु वाचनालय है, और प्रत्येक व्यक्ति हेतु कम्प्यूटर आदि की व्यवस्था है. यह विश्व का सबसे बड़ा वाचनालय है. इसकी दीवालों पर मिस्र की प्राचीन हाइरोग्लाइफिक लिपि में वह सब लिखा हुआ है, जो शिलालेखों पर लिखा पाया गया है. इसमें ऐसे कक्ष भी हैं जहां पढ़ने के अतिरिक्त प्राचीन वास्तुकला व चित्रकला भी सीखी जा सकती है, तथा प्राचीन मूर्तियों, चित्रों और सिक्कों को देखा जा सकता है. इस पुस्तकालय में ज्ञान प्राप्त करने हेतु मिस्र, अरब, तुर्की, इज़्राइल, ग्रीस आदि अनेक देशों से ज्ञान पिपासु प्राचीनकाल से यहां आते रहे हैं.

पहली फ़रवरी की प्रातः धूप खिली हुई थी और थोड़ी गर्मी भी हो रही थी. हमलोग साढ़े आठ बजे ही तैयार होकर सक़ारा के लिये निकल पड़े थे. सक़ारा में ज़ोजर नाम के राजा का सबसे पुराना पिरामिड है. इसे दुनिया का सबसे पहला मनुष्यों द्वारा किया गया ऐसा निर्माण, जो आज तक साबित बचा हुआ है, माना गया है. यह बस द्वारा गीज़ा से लगभग एक घँटे की दूरी पर स्थित है. हमें रास्ते में प्रायः वैसे ही सामान्य स्तर एवँ सामान्य रखरखाव के गांव व मकान मिले, जैसे अपने भारत के गांवों-कस्बों में मिलते हैं. रिहाब ने बताया कि मिस्र के लोग सामान्यतः गेहूं खाते हैँ और वही अधिकांश पैदा भी होता है. मिस्र में देश भर में वर्षा का वार्षिक औसत 2 मिलीमीटर है, तो चावल कहां पैदा होगा. इथियोपिया से आने वाली नदी ब्लू-नाइल पर वह देश एक बांध बनाने वाला है, जिसका मिस्र की सरकार विरोध कर रही है, क्योंकि इससे मिस्र आने वाली नील नदी में पानी की उपलब्धता काफ़ी कम हो जायेगी. यदि इथियोपिया न माना, तो हो सकता है कि विश्व का

प्रथम जल-युद्ध यहीं हो.

सक़ारा पिरामिड का द्वार

सक़ारा पहुंचते ही दूर से बालू के ढेर और उन पर बने ज़ोजर के छः-मंज़िले पिरामिड के अतिरिक्त अनेक छोटे-मोटे पिरामिड (अथवा कब्र) दिखाई देने लगे थे. मुख्य पिरामिड के गेट पर ऊंट वाले, गदहे वाले और गाइड पर्यटकों की प्रतीक्षा करते हुए मिले. रिहाब ने हमें आगाह कर दिया था कि ये सभी भांति-भांति से मिन्नत करके हमें उनकी सवारी करने को मजबूर करेंगे, परंतु पूर्वनिर्धारित दूरी का *रेट* तय किये बिना उन पर मत बैठियेगा, नहीं तो बाद में लम्बी रकम देने को मजबूर करेंगे. किसी भी हालत में इन पर बैठकर रेगिस्तान में दूर मत जाइयेगा, नहीं तो मुँहमांगी रकम न देने पर आप को वहीं छोड़कर वापस चल देंगे. वह *रेट* के विषय में कोई मदद नहीं कर पायेगी क्योंकि उससे आशा की जाती है कि वह अपने देशवासियों का साथ दे, न कि विदेशियों का.

पिरामिड तक पहुंचने से पहले हमें लाल पत्थर के एक विशालकाय गेट से घुसना पड़ा. इसके आगे 42 बड़े-बड़े नक्काशीदार खम्भे थे, जो 26-27वीं ईसापूर्व, जब यह पिरामिड बनाया गया था, की वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना थे. रिहाब ने बताया कि मिस्र के राजा को मारकर उसके 42 टुकड़े कर दिये गये थे. उसी की स्मृति में 42 खम्भे बनाये गये हैं. तब से मिस्र में 42 एक पवित्र संख्या मानी जाती है. बाद में बड़ा सा कक्ष था. दूसरे छोर पर पहुंचते ही रेत का विशाल मैदान और उस पर 62 मीटर ऊंचा छः मंज़िला पत्थर का विशाल स्तूप था. इसी के अंदर ज़ोजर अपनी रानियों व दास-दासियों के साथ ठाठ से जीवनोपरांत जीवन बिता रहा था. आजकल इस पिरामिड की मरम्मत का कार्य चल रहा था, अतः किसी पर्यटक को अंदर जाने की अनुमति नहीं थी. हमलोग पिरामिड के निकट तक गये और पिरामिड के तथा निकटस्थ अनेक कब्रों के चित्र खींचे. लौटने पर देखा कि इस बीच हमारे एक साथी ने एक ऊंटवाले के रिझाने पर 10 इजिप्शन पाउंड -लगभग 80 रुपये- में उसके ऊंट पर बैठने की बात स्वीकार कर ली थी. उसके ऊंट की पीठ पर सवार होकर ऊंट के खड़े हो जाने के बाद ऊंट वाले ने कहा पिरामिड तक - लगभग 100 मीटर- ले चलूं और यह

महाशय शान से बोले, 'क्यों नहीं?'. लौटने पर ऊंट वाला 25 पाउंड लेने पर अड़ा था और साथी महाशय भौचक थे. अंत में 25 पाउंड देकर ही इनका पीछा छूटा. उसी समय एक और उल्लेखनीय घटना घटी. हम वापसी में गेट से निकलने वाले थे कि एक लम्बी सुंदर सी युवती, जो हरे दुपट्टे से अपना सिर ढके थी, पास आकर हिंदी में बोली, 'आप लोग कहां से आये हैं?' हमारे 'इंडिया' कहने पर मुस्कराते हुए बोल पड़ी, 'अच्छा तो आप हमारे दुश्मन मुल्क से हैं.' हमारे साश्चर्य उसकी ओर देखने पर बोलने लगी कि वह पाकिस्तान से है और हम लोगों को देखकर अपनापन जागने के कारण पूछ बैठी थी. हम लोग भी मुस्करा पड़े और हमने उससे कुछ देर तक बात की और साथ-साथ फोटो भी खींचे.

खूफू पिरैमिड

सक़ारा से चलकर हमलोग मिस्र के सबसे बड़े पिरामिड को देखने गीज़ा के लिये चल दिये. यह पिरामिड चीओप्स नामक फ़ैरो के लिये बनवाया गया था और खूफू पिरामिड के नाम से प्रसिद्ध है. यह 450 फीट ऊंचा

है और इसे बनाने में तीस लाख पत्थर लगे थे. इन पत्थरों का औसत भार 2.50 टन है, परंतु कोई कोई पत्थर 20-25 टन का भी है. आज से चार हज़ार से अधिक वर्ष पूर्व इतने भारी पत्थरों को इतनी ऊंचाई तक चढ़ाने का कौशल कल्पनातीत प्रतीत होता है. इस पिरामिड के निर्माण में लगभग 100,000 कारीगरों ने 6 वर्ष तक कार्य किया था. पिरामिड के निर्माण में खगोल-विद्या का भी ध्यान रखा गया है जिससे ध्रुवतारा प्रतिरात्रि फ़ैरो की कब्र के सामने रहता है. इस कब्र में दफ़नाई अकूत सम्पत्ति लुट चुकी है और केवल ताबूत बचा है. इस पिरामिड से कुछ दूरी पर सम्राज्ञी का पिरामिड एवँ अनेक छोटे पिरामिड हैं. इन पिरामिडों के सामने 'द ग्रेट स्फिंक्स' नामक पिरामिड है. इसे चिओप्स के किसी पुत्र अथवा पौत्र ने स्वयँ को चिओप्स एवं उनकी रानी के पिरामिड का रक्षक घोषित करते हुए स्वयँ को पंजों के बल लेटे हुए नृसिंह की आकृति में दर्शाकर बनवाया है. चीओप्स के पिरामिड को चारों ओर से पैदल घूमने में बहुत समय लगता है, अतः वहां किराये की बग्घी भी उपलब्ध रहती है. अंदर जाने के लिये अलग से टिकट लेना पड़ता है, परंतु अंदर खाली कमरों के अतिरिक्त कुछ शेष नहीं बचा है. मैं देर तक इन पिरामिडों को देखते हुए उनमें दबे हुए हज़ारों कारीगरों-मज़दूरों और जीवनोपरांत स्वर्ग सम जीवन का आनंद लेने की अभिलाषा रखने वाले सम्राटों के विषय में कल्पनालीन रहा. मध्यान्ह भोजन में देरी हो जाने के कारण हम लोग उस दिन विश्वविख्यात ग्रेट स्फिंक्स को दूर से ही देखकर गीज़ा नगर चले गये और दूसरे दिन उसे निकट से देखने पुनः आये.

मध्यान्ह का भोजन लगभग चार बजे लिया गया. फिर रिहाब हमें 'गोल्डेन ईगिल पफ़्यूम शौप' पर ले गई. वहां हमारी जेबें ठंडी करने के आशय से हमारा खूब स्वागत किया गया और हमें ठंडा पेय पिलाया गया. एक बहुत ही चतुर *सेल्समैन* ने आकर हमें बताया कि वह *ओरिजिनल पर्फ्यूम्स* की सरकारी *शौप* है. फिर वहां बनने वाले उन इत्रों का मिलावट रहित होना ऐसे बताया गया जैसे शेष सभी स्थानों के इत्र में मिलावट के अतिरिक्त कुछ भी नहीं होता है.

विभिन्न फूलों के इत्रों की विभिन्न मात्रा की शीशियों को ऐसी नफ़ासत से खोलकर दिखाया गया जैसे सात तालों में बंद बेशकीमती हीरे की डिब्बियों को खोल रहे हों. फिर छोटे माप के बजाय बड़े माप की शीशी खरीदने पर होने वाले फ़ायदे को ऐसे प्रस्तुत किया गया जैसे बड़ी शीशी खरीदने वाला कारूँ का खजाना लूट लेगा. उस कुशल चितेरे ने हम सबके मस्तिष्क पर ऐसे कब्ज़ा कर लिया कि हममें से अधिकांश में बड़ी से बड़ी शीशियां लेने की होड़ लग गई. और अब हाल यह है कि इजिप्ट से लौटे हुए तीन महीने बीत रहे हैं और अभी तक मैने और नीरजा ने उन शीशियों की ओर कानी आंख भी नहीं देखा है. दूकान से चलने के बाद एक और रोचक बात हुई कि रिहाब ने हम सब से दूकान से प्राप्त खरीद की रसीदें मांग लीँ, जिन्हें अगले दिन वापस किया. इसका रहस्य ज्ञात करने पर पता चला कि रिहाब ने उन रसीदों की फोटो प्रतिलिपि कराई होगी और उन्हें दूकान में दिखाकर अपना कमीशन प्राप्त किया होगा.

रात्रि में हम सब 'द ग्रेट स्फ़िंक्स' पर होने वाले लेज़र शो को देखने गये. द ग्रेट स्फ़िंक्स के सामने बड़े से मैदान में हज़ारों कुर्सियां पड़ी थीं, जिन पर देश-विदेश से आये पर्यटक बैठे थे. सायँ के धुंधलके में स्फ़िंक्स के पीछे तीन ऊंचे-ऊंचे पिरामिडों का और कुछ छोटी-मोटी कब्रों का सिलुएट नज़र आ रहा था. ऊपर आकाश अंधकार पूर्ण हो रहा था- बस तारे टिमटिमाते नज़र आते थे. शो प्रारम्भ होने की घोषणा के साथ ही पूर्ण शांति व्याप्त हो गई थी, जो वातावरण को और रहस्य-रोमांचपूर्ण बना रही थी. फिर प्रारम्भ हुआ मिस्र के साढ़े चार हज़ार वर्ष के इतिहास का चलचित्र मय वर्णन. ऐसा लग रहा था जैसे मैं स्वयं भी उस इतिहास के साथ जी रहा हूं.

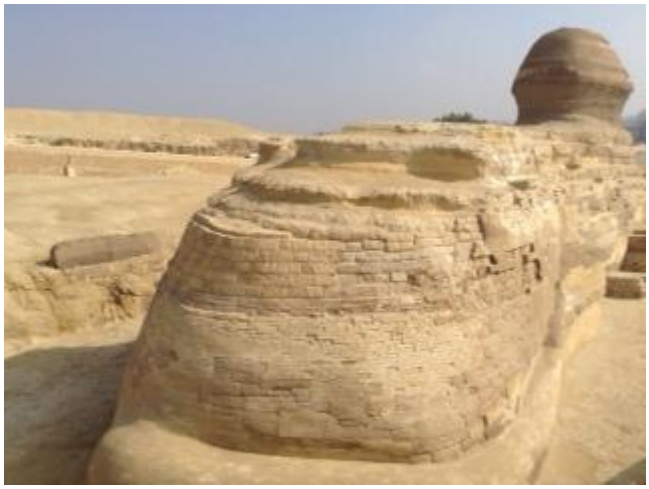

द ग्रेट स्फिंक्स का पृष्ठभाग

अगले दिन प्रातः 2 फ़रवरी को हम लोग पुनः 'द ग्रेट स्फ़िंक्स' देखने गये. रिहाब ने बताया कि 'द ग्रेट स्फिंक्स' वास्तव में चिओप्स के पुत्र की मूर्ति है, जिसने अपने को अपने पितरों के पिरामिड्स के रक्षक के रूप में नृसिंह की मूर्तिवत बनवाया था. यह मूर्ति बालू से पूर्णतः ढक गई थी और इसके चारों ओर खुदाई की गई है. मूर्ति में सिंह अपनी ही पूंछ को नीचे गोल फैलाकर पूरी लम्बाई प्रदर्शित करते हुए बैठा है. सभी ने यहां अनेक सेल्फी एवं अन्य चित्र खींचे.

इजिप्ट म्यूज़िअम

यहां से हम इजिप्शन म्यूज़ियम देखने गये. यह 1902 ईसवी से काहिरा के तहरीर स्क्वायर में स्थापित है. यद्यपि इसकी स्थापना उन्नीसवीं शताब्दी में ही हो गई थी, परंतु विभिन्न कारणों से इसे कई बार स्थानांतरित करना पड़ा. वर्ष 2011 की खूनी क्रांति में इस म्यूज़ियम पर भी हमला बोला गया था और अनेक *आर्टीफ़ैक्ट्स* तथा दो *ममी* को नष्ट कर दिया गया था. म्यूज़ियम-भवन दोतल्ला है- निचले तल पर पुराने ज़माने के पैपाइरस-लेखपत्र, कुछ बड़े आकार के *आर्टीफ़ैक्ट्स* तथा विभिन्न कालखंडों में प्रयुक्त सोने, चांदी, ताम्बे आदि

के सिक्के रखे हुए हैं. इन सिक्कों में ग्रीस, रोम और अरब देशों के प्राचीन सिक्के भी हैँ, जो दर्शाते हैं कि प्राचीन काल में भी इजिप्ट का व्यापार इन देशों से था. ऊपरी मंज़िल में दो कक्ष में अनेक ममी रखी हुई हैं. परंतु इस मंज़िल का सबसे बड़ा आकर्षण है तूतनखामेन के पिरामिड से मिले स्वर्णिम ताबूत, स्वर्णिम सिन्हासन, स्वर्ण की पत्र चढ़ी पालकी व बग्घी, बेशकीमती माणिक-हीरे लगे सोने के अति सुंदर नक्काशी वाले भारी भारी गहने और मुकुट आदि. यद्यपि चोरों ने लगभग अन्य सभी पिरामिडों/कब्रों को खंगाल कर कीमती माल पहले ही चुरा लिया था, परंतु तूतनखामेन, जो लगभग 12 वर्ष की आयु में ही परलोक सिधार गया था, की कब्र में उसके साथ दफ़नायी गयी वस्तुएं चोरों की निगाह से बच गयी थीं और खुदाई पर यथावत प्राप्त हो गई हैं. तूतनखामेन के शरीर को नष्ट होने से बचाने के लिये आवश्यक लेप लगाये गये थे. फिर उसे पहले एक संगमरमर के छोटे बक्से में और फिर भिन्न-भिन्न आकार के तीन सोने के बक्सों में रखा गया था, जिससे बाहरी वातावरण से वह अप्रभावित रहे. मिस्र की प्राचीन सभ्यता म्यूज़िअम में रखे एक-एक प्रदर्श से परिलक्षित हो रही थी.

इजिप्ट म्यूज़ियम

म्यूज़ियम देखने के पश्चात हमारा कार्यक्रम खान-एल-खलीली बाज़ार जाने का था. अब तक रिहाब हम सबसे काफ़ी खुल चुकी थी, अतः शाम को म्यूज़ियम से बार्गेन मार्केट जाते समय हमने उससे हिजाब पहिनने, तीन-तलाक़, चार विवाह और मज़हबी आतंकी संगठनों के विषय में प्रश्न किये. रिहाब जैसी खुले विचारों वाली लड़की से घिसे-पिटे मज़हबी बचाव वाले उत्तर सुनकर निराशा हुई. उसने बताया कि मिस्र में महिलाओं के लिये पूरे शरीर को ढकने वाला बुर्का पहिनना अनिवार्य नहीं है, पर सिर को ढकना अनिवार्य है. इसे ढकने से महिलाओं पर पुरुषों का ध्यान कम जाता है. यहां विवाहेतर सम्बंध पर कड़ी मुमानियत है और उसके दंडस्वरूप समाज प्रायः मौत भी दे देता है. उसका कहना था कि तीन-तलाक़ का हक़ होने और चार बीबियां रखने की आज़ादी से विवाहेतर सम्बंध बनाने की आवश्यकता ही नहीं होती है, इसलिये मिस्र मे ज़िनाकारी न के बराबर है. तीन तलाक़ शरिया के अनुसार है और औरत को मेहर पाने का हक़ देता है. हममें से किसी ने यह बात कहकर यात्रा का मज़ा किरकिरा नहीं करना चाहा कि उसकी बताई सभी युक्तियां केवल पुरुष को स्वच्छंदता प्रदान करतीं हैं-माहिलाओं के मूल अधिकारों पर तो गम्भीर कुठाराघात करती हैं. अफग़ानिस्तान, इराक़, ट्यूनिशिया, सीरिया, यमन, पाकिस्तान आदि में व्याप्त मज़हबी आतंकवाद को उसने अमेरिका की सस्ते तेल की हवस का परिणाम बताकर खारिज़ कर दिया. परंतु अगले एक प्रश्न के उत्तर ने उसके मानस की वास्तविक स्थिति खोलकर रख दी. यह पूछने पर कि वह दूसरी शादी कब करेगी, उसने उत्तर दिया, 'कभी नहीं, एक से ही भर पाये'.

खान-एल-खलीली बाज़ार में बड़ी भीड़ थी. यह लखनऊ के अमीनाबाद सा लग रहा था. उस शाम मंद-मंद बहने वाली बयार बड़ी सुखदायक लग रही थी. यहां अन्य लोग तो खरीदारी के उद्देश्य से बाज़ार में घूमते रहे, परंतु मैं और नीरजा देर तक एक रेस्ट्राँ के सामने पड़ी कुर्सियों पर बैठे रहे. साथ में रिहाब और अहमद भी बैठे रहे. हमने कुछ खाया पिया भी.

मैंने एक दिन पहले अहमद को 20 पाउंड का एक नोट यह कहकर दे रखा था कि वह मुझे इसके एक-एक पाउंड के बीस सिक्के दे दे, परंतु उसने अभी तक सिक्के नहीँ दिये थे. यह शाम हम लोगों के साथ की अंतिम शाम थी, अतः मैंने अहमद को नोट तुड़वाकर सिक्के देने की याद दिलाई, परंतु वह टस से मस न हुआ. फिर मेरे दो बार और याद दिलाने के पश्चात वापस चलते समय वह कठिनाई से उठा और एक हाथ में सिक्के भरकर लाया, जिन्हें मैंने बिना गिने अपने हाथ में लेकर जेब में रख लिया. बाद में गिनने पर वे 15 पाउंड के ही सिक्के निकले.

रहस्यों के देश मिस्र को कुछ देख-समझ कर और कुछ अबूझे रहस्यों को मन के गह्वर में छिपाये हम चिओप्स, तूतनखामन, क्लियोपैट्रा, अलेक्ज़ांडर आदि के खयालों में खोये रहकर 3 फ़रवरी को वापस भारत के लिये चल दिये.

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें